सहर्ष स्वीकारा है

1. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए
उ. प्रिय के प्रेम में निरंतरता है तथा अनंतता का भी परिचय मिलता है। 'जाने क्या ---- आता है' कवि जितना भी प्रेम अभिव्यक्त करता है उतना ही प्रेम उसके प्रिय के प्रति बढ़ जाता है। कवि समझ नहीं पाता कि उस अनाम प्रिय से मेरा क्या रिश्ता-नाता है जो मेरा मन उसके प्रति खिंचा चला जाता है।

2. जाने क्या ---- आता है का शिल्प-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए
शिल्पसौन्दर्य (काव्य-सौन्दर्य) (भाषा पर टिप्पणी)
1. कवि ने प्रिय के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त किया है।
2. कवि ने अत्यंत सरल शब्दावली का प्रयोग किया है,
3. "जाने क्या रिश्ता है ---- नाता है" में प्रश्न अलंकार है
4. भर-भर में अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है
5. माधुर्य गुण से युक्त रचना है।

3 कवि के हृदय में क्या वस्तु है जो पिराती है?
उ. प्रेमिका के प्रेम की कोमलता कवि के हृदय को पिराती है,

4. गरीबी को 'गरबीली' क्यों कहा गया है?
कवि गरीब है परंतु गरीब होना कोई अपराध नहीं है। कवि को इस बात पर फख्र है। वह कभी अपनी गरीबी का रोना नहीं रोना चाहता। उसके अंदर स्वाभिमान का भाव है। उसने कोई गलत कार्य नहीं किया है,

5. क्या चीज कवि को डराती है?
भविष्य अनिश्चित है। इस बात से कवि डर रहा है,

6. अंधकार अमावस्या को दक्षिणी ध्रुव क्यों कहा गया है?
दक्षिणी ध्रुव पर घनघोर अँधेरा होता है, अंधकार की भयावहता दिखाने के लिए इस विशेषण का प्रयोग किया गया है

इससे कवि की निराशा भी प्रकट हो रही है।

7. कवि क्या बरदाश्त नहीं कर पाता ?
प्रिय की आत्मीयता कवि से बरदाश्त नहीं होती है। प्रिय की याद उससे सही नहीं जाती है।

8. कवि अपने प्रिय को क्यों नहीं भूल पाता ?
कवि प्रिय के बहुत निकट है। उसका अपने प्रिय पर अत्यधिक स्नेह है। प्रिय के कारण ही कवि के हर कार्य होते हैं, उसकी सारी कमियों को उसके प्रिय ने स्वीकार किया है। उसकी एक एक संवेदना को जाग्रत करने में, उसकी भावनाओं में उसके प्रिय का ही योगदान है। प्रिय के बिना उसका जीवन अकल्पनीय है।

9. टिप्पणी कीजिए-
गरबीली गरीबी- गरीब होते हुए भी उसे अपनी गरीबी पर गर्व है उसकी गरीबी गर्व करने लायक है। क्योंकि गरीब होना कोई पाप का काम नहीं है। उसे किसी प्रकार की ग्लानि नहीं है।

भीतर की सरिता - कवि के हृदय में कोमल भावना रूपी नदी बह रही है। उसके हृदय में अनंत भावनाएँ व्याप्त हैं।
बहलाती सहलाती आत्मीयता- कवि के हृदय में प्रिय के प्रति आत्मीयता है। वह अपने प्रिय के अत्यंत निकट है। कवि की प्रिया उससे अपना प्रेम और स्नेह प्रकट करती है। कवि के प्रति उसके मन में प्यार की भावना है।
ममता के बादल - प्रेम की भावना बादल के समान आच्छादित है। प्रिय का प्यार कवि भुला नहीं पा रहा।

10. बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है" सहर्ष स्वीकारा है" में आप कैसे अन्तर्विरोध पाते हैं।
कवि ने अपने प्रिय से संबंधित हर चीज को प्रसन्नता से

स्वीकार किया है क्योंकि प्रेम की हर वस्तुएं उसे स्वीकार्य हैं परंतु अब प्रिय का वियोग, अधूरा प्रेम, बीता हुआ समय उससे बरदाश्त नहीं होता है।

11. कवि पाताली अँधेरे की गुफाओं में क्यों खो जाना चाहता है इसलिए क्योंकि प्रिय का वियोग उससे सहा नहीं जाता है। प्रिय उससे दूर है। उसकी यादें कवि को बेचैन करती हैं। वह इनसे दूर जाना चाहता है। वह बिना प्रिय के निराशा में जीना चाहता है। वह प्रिय के वियोग के दर्द के साथ जीना चाहता है।

12. झरपाती छाती की भवितव्यता डराती है - आशय स्पष्ट कीजिए
कवि भविष्य की आशंका से डर रहा है। बिना प्रिय के वह कैसे रह पाएगा यह सोच कर कवि व्याकुल हो उठता है। वह सोचता है कि वह किसके सहारे जिएगा। प्रिय के बिना तो उसका जीना दूभर हो जाएगा।

13. कवि अपने प्रिय से किस प्रकार प्रेरणा प्राप्त करता है?
प्रिय का खिला चेहरा देख कर कवि उत्साहित होता है। उसके मन में प्रेम की तरंगे हिलोरे लेती हैं। प्रिय को देखकर उसका मन आनन्दित हो उठता है। प्रिय उसे चाँद की भाँति सुन्दर प्रतीत होता है।

14. कवि अपने जीवन को सहर्ष क्यों स्वीकार करता है?
कवि अपने जीवन की हर उपलब्धि का कारण अपने प्रिय को ही मानता है। हर कार्य के पीछे उसे प्रिय की प्रेरणा दिखाई देती है। प्रिय को कवि की हर बातें अच्छी लगती हैं। इसलिए कवि अपने जीवन को सहर्ष स्वीकार करता है।

15. यह काव्यांश किसे संबोधित है?
यह काव्यांश कवि के प्रिय को संबोधित है। कवि ने किसी का नाम तो उजागर नहीं किया है पर संकेतों से यह स्पष्ट है कि ये कवि का कोई प्रिय ही है।

16. कवि को अपनी किस मौलिकता पर गर्व है?
कवि को अपनी नूतन आंतरिक अनुभूतियों पर गर्व है। विचारों की समृद्धि पर भी कवि गर्वित है। उसके विचार दृढ़ हैं। कवि का कहना है कि ये सब मौलिक हैं अर्थात इसमें कृत्रिम कुछ भी नहीं है।

17. कवि को अपने दिल में एक झरना क्यों प्रतीत होता है?
कवि अपने हृदय से जितना भी प्रेम उड़लता है, वह समाप्त नहीं होता। उसका हृदय प्रेम से सराबोर हो जाता है। प्रेम का झरना बह रहा है। प्रेम समाप्त न होने के कारण झरने के समान प्रतीत हो रहा है।

18. कवि कौन सा दंड पाना चाहता है और क्यों?
कवि अपने प्रिय से वियोग का दंड पाना चाहता है। उसका प्रिय उससे दूर है जिसके कारण कवि स्वयं दंड भोगना चाहता है। प्रिय के प्रेम के कारण वह कमजोर हो चुका है। उसकी आत्मा कमजोर हो गई है। अब उससे प्रिय का विछोह सहन नहीं होता है। इसीलिए वह स्वयं को दंड देना चाहता है।

19. कौन सा रमणीय उजाला कवि के लिए असह्य है?
प्रिय के स्नेह तथा प्रेम का रमणीय उजाला कवि से बर्दाश्त नहीं होता है। रमणीय इसलिए है क्योंकि प्रिय की हर बातें कवि को अच्छी लगती हैं।

20. शिल्प सौन्दर्य - 1. कवि का प्रिय अज्ञात है। वह कौन है, इसका रहस्य बना हुआ है।
2. संबोधन शैली के कारण यह पद्यांश प्रभावी बना है।
3. भाषा प्रवाहमय है।
4. पल-पल में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
5. माधुर्य गुण से युक्त कविता है।
6. तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है।
7. संस्कृत निष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया गया है
8. दुखपाती छाती में अनुप्रास अलंकार है।

उषा

1. कवि ने प्रातःकालीन वातावरण की समानता नीले शंख से क्यों की है?

प्रातःकालीन वातावरण नीले शंख के समान होता है। न गहरा काला न उजला। नीले शंख जैसा बुझा-बुझा सा प्रतीत होता है।

2. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है?

कविता में नीले आकाश को राख से लिपे चौके के समान बताया गया है। कवि कहता है कि भोर का नभ काले सिल के समान प्रतीत हो रहा है, यहाँ गतिशीलता दिखाई पड़ रही है। चौके को सुबह लीपा जा रहा है उसके बाद सिल का प्रयोग होगा। किसी की गौर देह नीले जल में झिलमिल कर रही हो इन उपमानों के माध्यम से भोर के नभ की तुलना की गई है।

3. चौके के गीले होने का क्या प्रतीकार्थ है?

प्रातः काल वातावरण में ओस तथा नमी रहती है, और गीले चौके में भी नमी है, दोनो में समानता दर्शाई गई है।

4. उषा कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए

भोर के समय आकाश का रंग गहरा नीला होता है, धीरे-धीरे आकाश का नीलापन कम होने लगता है और लालिमा का समावेश होने लगता है, नमी भी स्पष्ट होने लगती है, सूर्योदय पूर्व भोर का सौन्दर्य विभिन्न रूपों में बदलता जाता है, विभिन्न उपमानों का प्रयोग कर सुबह की लालिमा का चित्रण किया गया है।

5. इस काव्यांश के आधार पर प्रातःकालीन वातावरण का चित्रण कीजिए।

नभ स्लेट के समान प्रतीत हो रहा है। इसका रंग गहरा सुरमई है। किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं है। अतः यह चौके जैसा प्रतीत हो रहा है। नभ ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे जरा से केसर से बहुत काली सिल धुल गई हो।

6. नील जल में हिलती झिलमिलाती देह के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
कवि नील जल में हिलती झिलमिलाती देह के माध्यम से बता रहा है कि जैसे नीले जल में कोई गोर वर्ण का शरीर वाला स्नान कर रहा है वह वैसे ही प्रतीत हो रहा है जैसे काले आकाश में सूर्य के निकलने से लालिमा प्रतीत होती है।

7. काव्य सौन्दर्य - 1. शंख जैसे में उपमा अलंकार का प्रयोग है।
2. वर्णन में चित्रात्मकता है।
3. प्रसाद गुण का प्रयोग द्रष्टव्य है।
4. कवि की कल्पना में मौलिकता है।
5. नवीन उपमानों का प्रयोग किया गया है।
6. अत्यंत सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है।

8. सूर्योदय से उषा का कौन सा जादू टूट रहा है?
कवि ने भोर के नभ की सुन्दरता का अनेक उपमानो द्वारा चित्रण किया है। कभी कालीसिल पर केसर से धुला हुआ कभी राख से लीपे हुए चौके के समान कभी झिलमिल देह के समान। परंतु सूर्योदय होने पर ये जादू टूट जाता है और वास्तविकता सामने आ जाती है कि वाकई सूर्योदय हो रहा है।

9. सिल और स्लेट का उदाहरण देकर कवि ने आकाश के रंग के बारे में क्या कहा है?
सिल और स्लेट का उदाहरण देकर कवि ने यह स्पष्ट किया है कि भोर के समय का आकाश गहरा नीला काला है और उसमे थोड़ी-थोड़ी सूर्योदय की लालिमा मिली हुई है।

10. स्लेट पर लाल खड़िया चाक मलने के सौंदर्य को स्पष्ट करिए
काली स्लेट पर यदि लाल खड़िया को मल दिया जाए तो उसका रंग प्रातःकालीन आकाश पर सूरज की लालिमा के समान प्रतीत होता है। दोनो में समानता दिखाई गई है।

11. भोर के नभ को राख से लीपा हुआ चौका क्यों कहा गया है?
सुबह सूर्योदय अभी नहीं हुआ है। आकाश का रंग भी राख के समान प्रतीत हो रहा है, कवि ने दोनों में समानता दिखाने के लिये ये तुलना की है।

12. नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है - स्पष्ट कीजिए
नयी कविता में नये प्रयोग होते हैं। प्राय: कोष्ठक के द्वारा अतिरिक्त ज्ञान बताया जाता है। अतिरिक्त जानकारी से अर्थ पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है।

13. उषा का जादू टूटने का क्या आशय है?
इसका अर्थ है प्रात: कालीन वातावरण का अपार सौन्दर्य। जब तक सूर्योदय नहीं हुआ था कवि को सुबह की लालिमा भाँति भाँति की प्रतीत होती है परंतु सूर्य निकलने पर सब स्पष्ट हो जाता है और भ्रम समाप्त हो जाता है।

14. नील जल द्वारा कवि प्रात:काल के किस दृश्य को चित्रित करना चाहता है?
इसके द्वारा कवि प्रात: कालीन नीले स्वच्छ आकाश को चित्रित करना चाहता है।

बादल राग

1. काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए या भाषा पर टिप्पणी कीजिए
शाप्त पंक . . . . . . प्लावन
1. पंक शोषित वर्ग का प्रतीक है। प्रतीक होने के कारण अर्थ में गहराई आ जाती है।
2. शब्द छोटे-छोटे और कसे हुए हैं। इन पंक्तियों में सूक्ति जैसा प्रभाव है।
3. 'ही होता' में अनुप्रास अलंकार है।
4. प्रसादगुण कविता में विद्यमान है।

2. अस्थिर सुख पर दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों?
जिस प्रकार समुद्र पर हवा चलती रहती है उसी प्रकार सुख और दुख जीवन में आते रहते हैं। वायु अस्थिर है, बादल घने हैं उसी प्रकार सुख अस्थिर होता है। इस प्रकार यह तुलना की गई है।

3. हँसते हैं . . . . . . भार- का शिल्प सौन्दर्य या भाषा पर टिप्पणी कीजिए
1. पौधे का मानवीकरण किया गया है। इससे काव्य में सजीवता आ गई है।
2. छोटे पौधे निम्न वर्ग के प्रतीक हैं।
3. छोटे पौधे के लिए लघुभार विशेषण सटीक है। शोषित वर्ग की लघुता को दर्शाने के लिए यह एक सुंदर प्रयोग है।
4. 'हँसते हैं छोटे पौधे' में 'ए' ध्वनि की आवृत्ति के कारण स्वर मैत्री दिखाई पड़ती है।
5. भाषा प्रवाहपूर्ण है।

4. कवि ने 'जग के दग्ध हृदय' का प्रयोग किस अर्थ में किया है?
संसार के लोगों का हृदय शोषण से जल रहा है जैसे धरती गरमी से जल रही है उसी प्रकार शोषित वर्ग का शोषण हो रहा है। वे लोग दुखी परेशान हैं

कविता का भाव बोध तो प्रगतिवादी है लेकिन शिल्प छायावादी है।

5. काव्य सौन्दर्य (शिल्प सौन्दर्य) रोग .... शरीर
1. शैशवनामक अवस्था का मानवीकरण किया गया है,
2. शैशव यहां निम्न वर्ग का प्रतीक है,
3. रोग शोक में 'ओ' की स्वर मैत्री
4. प्रसाद गुण से युक्त कविता
5. शब्द-चयन भावानुकूल है।

6. बादल निर्दय विप्लव क्यों मचा रहे हैं!
इसलिए क्योंकि पूरी धरती गरमी से तप्त है। किसानवर्ग परेशान है। फसल सूख गई है। इसलिये बादल जल बरसा कर क्रांति मचा रहे हैं जिससे सबकी प्यास बुझ जाए धरती पर हरियाली छा जाए। बादल क्रांति के प्रतीक हैं।

7. काव्यसौन्दर्य (भाषा पर टिप्पणी) रुद्ध ...... शरीर
1. भाषा की समाहार (समास) शक्ति दर्शनीय है। दो शब्दों में पूरी अर्थ-व्यंजना कर दी गई है,
2. संस्कृत निष्ठ भाषा है।
3. रुद्ध कोष का अर्थ है धनियों की अचल धन संपदा

8. बादलों के विप्लवी रूप की व्याख्या कीजिए
इस पद्यांश में बादल का विप्लव रूप दिखाया गया है। उसका विशालकाय रूप रण की नौका के समान है। वह जल बरसा कर सूखे मुरझाये पौधों में जान डाल देते हैं, बादल सभी के दुखों को दूर करने वाले हैं। उनकी गर्जना रणभेरी के समान है।

9. विप्लव के बादल का आह्वान समाज का कौन सा वर्ग सबसे अधिक करता है और क्यों?
विप्लव के बादल का आह्वान समाज का किसान और दलित वर्ग सबसे अधिक करता है, क्योंकि क्रांति और विप्लव घटित होने से इसी वर्ग के उत्थान का रास्ता

सुनता है। उनका शोषण रुक जाता है।

10. धनी गर्जना का स्वर सुनकर सोए हुए अंकुरों पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
बादलों की घन गर्जना सुनकर धरती की कोख में सोए हुए नव अंकुर नवजीवन पाने की आशा और आकांक्षा से ऊँचा सिर किए प्रसन्न होने लगे। अर्थात् मुरझाए फूल पौधे जल की आशा में खिल उठे कि अब उनका दुख दर्द दूर होगा।

11. विप्लवी बादल से संपन्न और विपन्न वर्ग पर क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं?
विप्लवी बादल से संपन्न वर्ग भयभीत हो जाता है क्रांति की आशा से डर जाता है परंतु विपन्न वर्ग प्रसन्न हो जाता है कि अब हमारी समस्याएँ दूर होंगी। संपन्न वर्ग को धन लुटने का भय सताने लगता है तथा शोषित वर्ग लाभ मिलने की आशा से प्रसन्न हो जाता है।

12. इस कविता में बादलों को विप्लवकारी योद्धा के रूप में किस प्रकार चित्रित किया गया है?
जैसे योद्धा युद्ध जीतकर गरीबों को न्याय दिलाता है उसी प्रकार बादल सूखे पौधों में जल बरसाकर उन्हें नया जीवन देते हैं। बादलों की गर्जना को रण में बजने वाली भेरी के समान चित्रित किया गया है।

13. अट्टालिका नहीं है रे आतंक भवन'- निराला की कविता 'बादल-राग की इस पंक्ति में अट्टालिका को आतंकभवन क्यों कहा गया है?
धनी वर्ग, जो इन ऊँचे भवनों में रहता है, वह हमेशा क्रांति के भय से काँपता रहता है यदि सही अर्थों में अट्टालिका बनी रहती, तो शोषक वर्ग हर तरह से इसमें सुख- सुविधाओं को भोगता हुआ प्रसन्न रहता। लेकिन वह अपने इन सुरक्षित और संपन्न भवनों में रहता हुआ भी विनाश तथा क्रांति की संभावना से भयभीत रहता है। यह वर्ग जानता है कि इसने शोषण तथा

दमन से शोषितों का खून चूसा है।

14. इस कविता का मूल स्वर प्रगतिवादी तथा शिल्प छायावादी है सिद्ध कीजिए
कविता का विषय प्रगतिवादी है लेकिन कविता की बनावट यानी उसका शिल्प सौन्दर्य छायावाद से प्रभावित है। कवि ने प्राकृतिक प्रतीकों का सुंदर प्रयोग किया है

15. बादल राग कविता में निराला की सहानुभूति समाज के कौन से वर्ग के साथ है?
बादलराग कविता में कवि की सहानुभूति समाज के दलित, शोषित तथा कृषक वर्ग के साथ है। इसका कारण यह है कि यह वर्ग ही अत्याचार से पीड़ित है। गरीब है। उसकी अवस्था दीन-हीन है। जिस समय कवि ने कविता लिखा समाज में गरीब लोगों की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी

16. मानवीकरण अलंकार का उदाहरण दीजिए।
मानवीकरण अलंकार का मनोरम प्रयोग हुआ है। बादल को
रणतरी लाते हुए
2. रणभेरी बजाते हुए
3. अंकुरों को सिर ऊँचा करके चलते हुए दिखाया गया है।

17. 'चूस लिया है उसका सार' द्वारा कवि क्या व्यंजित करना चाहता है।
कवि यह कहना चाहता है कि शोषकों ने गरीब, किसान मजदूरों का खूब शोषण किया है। उनको इतना सताया गया है कि वे हड्डी मात्र रह गये हैं।

18. शिल्प सौन्दर्य (काव्य सौन्दर्य)
1. 'सुप्त अंकुर' दबी हुई आवाज के प्रतीक हैं।
2. "भेरी गर्जन' बादलों की गड़गड़ाहट है।
3. रूपक अलंकार का प्रयोग समीर-सागर, रण-तरी, विप्लव के बादल, दुख की छाया
4. अनुप्रास अलंकार - समीर सागर पर, सजक सुप्त

5. 'फिर-फिर' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

19. 'सुप्त अंकुर उर में पृथ्वी के' से क्या तात्पर्य है। प्रतीक को स्पष्ट कीजिए
सुप्त अंकुर का अर्थ है - निम्न वर्ग के लोग जिन्हें फलने-फूलने और उन्नत होने का अवसर नहीं मिलता। वे शोषण पूर्ण समाज रूपी पृथ्वी की छाती में अब तक दबे पड़े हैं। कवि का आशय है कि यदि क्रांति घटित हो जाए और सर्वत्र समानता आ जाए तो शोषित, पीड़ित को भी आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।

20. सिद्ध कीजिए कि बादल क्रांति के प्रतीक हैं।
बादल क्रांति के प्रतीक हैं क्योंकि वे तप्त धरती को जल बरसाकर शीतलता प्रदान करते हैं। किसानों की व्यथा को वर्षा कर दूर करते हैं। पीड़ित शोषित किसानों के जीवन में परिवर्तन कर खुशहाली लाते हैं। बारिश न होने से पानी की कमी हो जाती है जो बादल बरस कर उस कमी को दूर करते हैं।